सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से संबद्ध)

33, प्रभांजलि, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती

महासचिव : का. डी. आर. महापात्र

परिपत्र क्र. : 10/2019

दिनांक : 09/12/2019

मध्य क्षेत्र के समस्त साथियों के नाम

सीजेडआईईए का दसवां महाधिवेशन

विषय : आत्मविश्वास के साथ संघर्षों को आगे बढ़ाने का आव्हान

प्रिय साथियों ,

मौजूदा कठिन परिस्थिति का मुकाबला करने संपूर्ण आत्म विश्वास के साथ संघर्ष को आगे बढ़ाने के आव्हान के साथ सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन का 10वां महाधिवेशन 23 से 26 नवंबर 2019 को मध्यप्रदेश की संस्कारधानी जबलपुर में उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। सम्मेलन की आयोजक इकाई जबलपुर डिवीजन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन के प्रत्येक साथी के समर्पण, उत्साह, लगन व अनथक परिश्रम ने इस महाधिवेशन को ऐतिहासिक रूप से सफलता प्रदान की। आयोजन स्थल समन्वय केन्द्र का नामकरण बीमाकर्मी आंदोलन के महानायक काम. एन.एम. सुंदरम् की स्मृति में किया गया था। जबकि अधिवेशन का मंच काम. आर. गोविन्दराजन की स्मृति को समर्पित किया गया था। अधिवेशन स्थल को झंडियों, बैनरों, तोरण, पोस्टरों व स्वागत द्वारों से भव्य रूप से सजाया गया था।

विहंगम रैली

अधिवेशन के प्रथम दिन 23 नवंबर को अपरोह 1 बजे एलआईसी मंडल कार्यालय प्रांगण मदन महल से विराट एवं विहंगम रैली ने जबलपुर की आम जनता का ध्यान आकृष्ट किया। हजारों की तादाद में पूरे मध्यक्षेत्र में पहुंचे बीमाकर्मी अपनी मांगों से संबंधित बैनर व पोस्टर लेकर जोशीले नारों के साथ रैली में चल रहे थे। सैकड़ों की संख्या में महिला बीमाकर्मियों ने भी रैली में न केवल शिरकत की बल्कि इसकी अगुवाई की। आयोजक इकाई जबलपुर मंडल सहित आसपास के मंडलों से बीमाकर्मियों ने लगभग पूरी संख्या में उपस्थिति दर्ज कर रैली को भव्यता प्रदान की । रैली में सबसे आगे नर्तकों की टोली अहीर नृत्य करते हुए चल रही थी। रैली का अनेक स्थानों पर बिरादराना संगठनों एवं आम जनता ने स्वागत किया। रैली में बीमाकर्मी केवल अपनी मांगों पर ही नहीं वरन् मेहनतकश जनता से जुड़ी मांगों को भी उठा रहे थे। यह विहंगम रैली समन्वय केन्द्र में जाकर खुले सत्र की कार्यवाही में रूपांतरित हो गई। सीजेडआईईए के अध्यक्ष काम. एन. चक्रवर्ती द्वारा गननभेदी नारों के मध्य ध्वज फहराये जाने तथा अमर शहीदों की स्मृति में शहीद वेदी पर अतिथियों, पदाधिकारियों, बिरादराना जन संगठनों व उपस्थित समुदाय द्वारा पुष्पांजलि अर्पित किये जाने तथा उन्हें श्रद्धांजलि देने के साथ खुला सत्र की कार्यवाही आरंभ हुई।

प्रेरणादायक खुला सत्र :

सीजेडआईईए के 10वें महाधिवेशन के उद्घाटनकर्ता अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त अर्थशास्त्री प्रो. प्रभात पटनायक थे। इसके साथ ही एआईआईईए के अध्यक्ष काम. अमानुल्ला खान मुख्य अतिथि थे। महासचिव काम. व्ही. रमेश, कोषाध्यक्ष काम. बी.एस. रवि, सहसचिवद्वय काम. श्रीकांत मिश्र एवं काम. बी. सान्याल विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सीजेडआईईए के अध्यक्ष काम. एन. चक्रवर्ती, महासचिव सहित सम्पूर्ण सचिव मंडल भी इस भव्य मंच को सुशोभित कर रहा था। स्वागत समिति के अध्यक्ष साहित्यकार श्री तरुण गुहा नियोगी एवं पेंशनर्स एसोसियेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष काम. विनय गुप्ता भी मंच पर उपस्थित थे। अतिथियों के भावभीने स्वागत के पश्चात जेडीआईईयू सांस्कृतिक मंडली ने प्रस्तुत स्वागत गीत एवं जनगीतों का समां बांध दिया। हजारों लोगों से खचाखच भरे सभागृह में स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री तरुण गुहा नियोगी ने अपना स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए एआईआईईए के संघर्ष की सराहना की। सीजेडआईईए के अध्यक्ष काम. एन. चक्रवर्ती ने अध्यक्षीय भाषण पेश करते हुए मध्यक्षेत्र के बीमाकर्मियों के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को रेखांकित करते हुए आव्हान किया कि अधिवेशन में इन पर प्रभावी विमर्श हो।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात अर्थशास्त्री श्री प्रभात पटनायक ने कहा कि आज हमारे देश में अर्थव्यवस्था गहरे संकट के दौर से गुजर रही है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण की रिपोर्ट यह बताती है कि वर्ष 2011-12 की तुलना में वर्ष 2017-18 में प्रति व्यक्ति उपभोक्ता खर्च में 4 प्रतिशत की कमी आई है। सन् 1947 के बाद ऐसा पहली बार हो रहा है। बेरोजगारी साढ़े चार दशकों के बाद सबसे ज्यादा है। जीएसटी के चलते छोटे उत्पादकों का बुरा हाल है। यहां तक कि बिस्किट की मांग में भी कमी आई है। जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि 1991 की तुलना में 2011 में किसानों की तादाद 1 करोड़ कम हुई है क्योंकि कृषि में लाभ समाप्त हो गया है। यह 1973 के आर्थिक संकट के बाद का सबसे बड़ा संकट है। लेकिन 1973 का संकट फसलों के उत्पादन में कमी एवं ओपेक देशों द्वारा तेल की कीमतों में 4 गुना बढ़ोत्तरी किये जाने के कारण पैदा हुआ था। आज फसलों का उत्पादन भरपूर है लेकिन जनता के पास क्रय शक्ति नहीं है। ऐसा नव-उदारवादी नीतियों के

प्रभाव से हो रहा है। नव-उदारवाद वित्तीय पूंजी के लिए दरवाजे खोलकर रखता है। अत: वित्तीय पूंजी को खुश रखना सरकार की जरूरत बन जाती है। वित्तीय पूंजी मेहनतकश जनता पर हमले करती है और कार्पोरेटों के हितों में नीतियां बनाती है। आज हमारे देश में किसानों की फसलों की कीमतों में पूर्व में दी जा रही सुरक्ष समाप्त कर दी गई है। इससे किसानों की स्थिति गंभीर हो गई है। देश में विगत 2 दशकों में रोजगार के अवसर बहुत कम हुए हैं। अधिकांश अर्द्ध बेरोजगारी की स्थिति में हैं। संगठित क्षेत्र में श्रमिकों की संख्या कम होते जाने से उनकी सौदेबाजी की ताकत घट रही है। मेहनतकश जनता की प्रति व्यक्ति आय घटने से मांग में भारी कमी आई है। यह इस व्यवस्था की विफलता है। आय में असमानता बढ़ी है और आम व्यक्ति के स्थान पर चंद पूंजीपतियों के हाथों में पैसा एकत्रित हो रहा है। अत: आय के पुनर्वितरण की आवश्यकता है। आज अमेरिका और यूरोपीय देशों में भी इन नीतियों के चलते संकट बढ़ा है। बढ़ते संकट के खिलाफ जनता के आक्रोश को संगठित होने से रोकने नव-उदारवाद , जनवादी अधिकारों पर हमले करता है। दूसरी ओर मंदिर-मस्जिद, नागरिकता, धर्म, क्षेत्र के नाम पर दक्षिणपंथी ताकतें जनता को विभाजित कर रही है ताकि वे एकजुट होकर सही लड़ाई नहीं लड़ सकें। प्रो. प्रभात पटनायक ने कहा कि मांग की कमी से पैदा हुआ आर्थिक संकट, मांग बढ़ाये जाने से ही दूर होगा। अत: मजदूरों का वेतन बढ़ाये जाने एवं किसानों को छूट दिये जाने की जरूरत है। लेकिन सरकार मजदूरों के वेतन, भत्ते, पेंशन, किसानों की सब्सिडी कम कर रही है जबकि पूंजीपतियों के हजारों करोड़ रुपयों के टैक्स माफ कर रही है। इससे संकट और गहरा हुआ है। उन्होंने भोजन, रोजगार, नि:शुल्क चिकित्सा, नि:शुल्क शिक्षा एवं वृद्धावस्था पेंशन का अधिकार प्रत्येक नागरिक को प्रदान किये जाने की मांग करते हुए कहा कि कल्याणकारी राज्य की स्थापना एवं समाजवादी रास्ते पर चलकर ही वर्तमान संकट से उबर पाना संभव है।

अधिवेशन के मुख्य अतिथि एआईआईईए के अध्यक्ष काम. अमानुल्ला खान ने खुले सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि भारत में आर्थिक संकट के साथ सामाजिक संकट भी गहरा हुआ है। बीमाकर्मियों का यह सम्मेलन इन दोनों संकटों पर चर्चा करते हुए एलआईसी एवं आम बीमा निगम की रक्षा हेतु जोरदार आंदोलन की रणनीति तैयार करेगा। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकारी नीतियों के चलते सार्वजनिक क्षेत्र की लाभप्रद इकाइयां तथा रेल्वे एवं बीएसएनएल जैसे संस्थान बर्बाद होते जा रहे हैं। एलआईसी को बर्बाद करना भी केन्द्र सरकार की आर्थिक नीतियों का हिस्सा है इसलिए बीमाकर्मी इस देश की करोड़ों मेहनतकश जनता के साथ मिलकर 8 जनवरी 2020 की देशव्यापी आम हड़ताल को पुरजोर रूप से सफल बनाएंगे ताकि मोदी निजाम की नवउदारवादी व दक्षिणपंथी नीतियों को रोकने हेतु जनदबाव कायम किया जा सके। उन्होंने कहा कि बीमाकर्मियों ने एआईआईईए के नेतृत्व में सरकार की नवउदारवादी नीतियों को शिकस्त देते हुए पेंशन का अंतिम विकल्प एवं नई भर्ती जैसी अनेक मांगों को हासिल किया है। आज वेतन पुनर्निर्धारण एवं एलआईसी की रक्षा का संघर्ष हम आगे बढ़ा रहे हैं। विश्व में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है जहां सार्वजनिक क्षेत्र की जीवन बीमा कंपनी ने निजी कंपनियों से प्रतिस्पर्धा करते हुए प्रीमियम आय में 40 प्रतिशत की वृद्धि हासिल कर पॉलिसी संख्या में 74 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी हासिल की हो। लेकिन सरकार एलआईसी को शेयर मार्केट में अधिसूचित कर हमारी ताकत कमजोर करना चाहती है। काम. अमानुल्ला खान ने जोर देकर कहा कि पालिसीधारकों की बेहतर सेवा, जनसंघर्षों में व्यापक भागीदारी एवं सामाजिक समरसता बनाये रखने के प्रतिबद्ध प्रयासों के साथ बीमाकर्मी एलआईसी की रक्षा करते हुए एक बेहतर वेतन पुनर्निर्धारण प्राप्त करने में निश्चित रूप से सफल होंगे। 'हम उदास मौसम के खिलाफ लड़ेंगे' इस कविता की पंक्ति को भावपूर्ण रूप से प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि बेहतर प्रतिबद्धता, वैज्ञानिक समझ एवं जुझारू संघर्ष के साथ सीजेडआईईए मध्य क्षेत्र में बीमाकर्मियों को ज्यादा सक्रिय एवं एकजुट रखने में सफल होगी।

एआईआईईए के महासचिव का व्ही. रमेश ने खुले सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि भारत में गरीबों को लूटा जा रहा है और उस लूट के पैसों से अमीर और ज्यादा अमीर होते जा रहे हैं। हमारे देश में न्यूनतम वेतन मात्र 178 रु. प्रतिदिन निर्धारित किया गया है जबकि केवल 2 महीनों में अंबानी की संपत्ति में 2 लाख 73 हजार करोड़ रुपयों का इजाफा हुआ है। इस भयावह असमानता के खिलाफ उभरते जन संघर्षों को रोकने के लिए ट्रेड यूनियन अधिकारों में कटौती सहित सारे लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमले जारी हैं। आने वाले दिन कठिन चुनौतियों के हैं। हमें धर्म-जाति-भाषा के नाम पर लड़ने की जरूरत नहीं है। हमें कठिन चुनौतियों का मुकाबला करने हमारे संगठन को ज्यादा सशक्त बनाना होगा।

खुले सत्र को संबोधित करते हुए एआईआईईए के सहसचिव काम. बी. सान्याल ने कहा कि मोदी सरकार की नीतियों का विरोध करने वालों को देशद्रोही घोषित किया जा रहा है। जिन लोगों ने देश की आजादी के लिए कोई बलिदान नहीं दिया था वही लोग आज हमें देशभक्ति का पाठ पढ़ा रहे हैं। बीमाकर्मी सहित देश भर के श्रमिक सबसे पहले मेहनतकश हैं और मेहनतकशों के रूप में अपनी लड़ाई को तेज करेंगे। उदारीकरण के हमलों को परास्त करने संगठन को मजबूत करना होगा। एलआईसी के दफ्तर में हम हिन्दुस्तानी हैं और एआईआईईए ही हमारी ताकत है। खुले सत्र को मप्र किसान सभा के महासचिव काम. रामनारायण कुररिया ने संबोधित करते हुए कहा कि किसानों के साथ श्रमिकों के साझा संघर्ष से ही नव-उदारवादी नीतियों पर वज्रप्रहार करना संभव होगा। सीजेडआईईए के महासचिव ने सभी अतिथियों को विश्वास दिलाया कि उपरोक्त सभी प्रश्नों पर प्रतिनिधि सत्र में व्यापक विमर्श कर निश्चय ही सम्मेलन उचित फैसले लेगा व उनके द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव के साथ इस सत्र की कार्यवाही समाप्त हुई।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ...

आपका साथी

(डी.आर. महापात्र)

महासचिव